साप्ताहिक विधान (लघु)

(ग्रहारिष्ट निवारक विधान)

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

नवग्रह शांति के लिये मंत्रजाप

1. सूर्य - ॐ णमो सिद्धाणं।
2. चन्द्र - ॐ णमो अरिहंताणं।
3. मंगल - ॐ णमो सिद्धाणं।
4. बुध - ॐ णमो उवज्झायाणं।
5. बृहस्पति - ॐ णमो आइरियाणं।
6. शुक्र - ॐ णमो अरिहंताणं।
7. शनि - ॐ णमो लोए सव्व साहूणं।
8. केतु - ॐ णमो सिद्धाणं।
9. केतु-राहू - ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं
ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं।

प्रस्तुत पुस्तक में सप्ताह के सात दिनों में कौनसी पूजा विधान कौन से वार को करना है उसी क्रम से दिया है पुण्य का कोष भरने, पापों का क्षय करते हेतु अधिकाधिक समय प्रभु गुणगान में व्यतीत करें। इसी भावना के साथ प्रभु एवं गुरु चरणों में शत्-शत् नमन।

– मुनि विशाल सागर

भक्ति की महिमा

नवदेव पूज्यं लोके, पुण्य वर्धन हेतवे।
तेषा: आराधना: कुर्यात्, विशद शैव प्रदायक:॥

नवदेव लोक में पूज्य माने गये हैं जो पुण्य वृद्धि में हेतु हैं उनकी आराधना विशद मोक्ष प्रदायी है जो अवश्य करने योग्य है। अनादि निधन जैन धर्म में भक्ति को मुक्ति का साधन माना गया है। मुक्ति के दो मार्ग कहे गये हैं - 1 तप मार्ग, 2 भक्ति मार्ग।

वर्तमान के दौर में व्यक्ति स्वयं को दुखी और असहाय मान रहा है इस स्थिति में लोगों के द्वारा प्रतिदिनि के आराध्य जिन निश्चित किए हैं उनके अनुसार लघु विधान करना चाहते हैं उनकी भावनाओं को देखते हुए लघु विधानों की रचना की गई जो लोगों को पसन्द आएगी एवं पूजा भक्ति करके पुण्यार्जन करते हुए विशद जीवन को मंगलमय बना सके इस भावना से प्रस्तुत है यह साप्ताहिक विधान संग्रह जो गुरुवर के आशीर्वाद का प्रसाद है। संघस्थ ब्र. आरती दीदी ने पुस्तक के कंपोजिंग में सहयोग प्रदान किया उनको हमारा मंगलमय आशीर्वाद।

ॐ नम:

आचार्य विशद सागर

कौशाम्बी, 4-5-2021

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं
पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं ।।

आप्तेन विशदो धर्मः, परोपकृतये शताम्।
गम्भीर ध्वनिनाऽ भाषिः, वर्ण मुक्तेन् निस्पृहम्।।

अर्थ – आप्त ने अपनी गम्भीर वाणी से निर्मल और जीवों के कल्याण हेतु धर्म का स्वरूप भव्य जीवों के कल्याण हेतु कहा है।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिन:, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्द:)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः दीपं निर्व. स्वाहा।
अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः फलं निर्व. स्वाहा।
पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।
।। शांतये शांतिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ,लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

(दोहा)

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस-छन्द)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।1।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।2।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।3।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।4।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।5।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।6।।

दोहा - अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव,विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्द:)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा - जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध है इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर है मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा - सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री ....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिवरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

देव–शास्त्र–गुरु की आरती

(तर्ज - ॐ जय देव.....)

ॐ जय देव शास्त्र गुरुवर, स्वामी देव शास्त्र गुरुवर।
आरती करें तुम्हारी-2, दीपक शुभ लेकर।।
ॐ जय देव शास्त्र।।टेक।।

प्रथम आरती देवश्री जो, अर्हत् कहलाए-स्वामी...।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी-2, परम शुद्ध गाए।।
ॐ जय..... ।।1।।

जिनवाणी कल्याणी है जो, जग माता गाई-स्वामी...।
पढ़ें सुने ध्याने वाले की-2, बुद्धि बढ़े भाई।।
ॐ जय..... ।।2।।

आचार्योपाध्याय साधु दिगम्बर, गुरुवर कहलाए-स्वामी...।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, गुरुवर ये गाए।।
ॐ जय..... ।।3।।

देव शास्त्र गुरु की जो प्राणी, आरति यह गाए-स्वामी...।
'विशद' सौख्य पाके इस जग के-2, शिव पथ अपनाए।।
ॐ जय..... ।।4।।

पद्मप्रभु स्तवन

कौशाम्बी नगरे जातः, सुसीमा नन्दनो जिनः।
पद्म चिन्ह पदं ज्ञेयं, पद्मप्रभ जिनेश्वरं।।1।।

(छन्द इन्द्रवज्रा)

श्री देव देवो पदपुंडरीकः, श्रियं विधत्तात्सुख शांति रूपम्।
यं प्राप्य भव्या अति दुर्लभं तं, गच्छन्ति पारं भवदुःख वार्धेः।।2।।

संसार सौख्याय जलांजली यो, दत्त्वा च त्यक्त्वा सुख राज्य भोगम्।
कृत्त्वा तपस्-तीव्रतरं प्रदीप्तं, कर्माणि चोद्पद्य जगाम प्रमोक्षम्।।3।।

नक्षत्रवृंदैः समुपास्यमानः, विभ्राजते पूर्णकलः शशीव।
धर्मामृतैः सिंचति भव्यजीवान्, पद्मजिनं पद्मप्रभ स्तुवे तं।।4।।

अनन्त संसार पारं पराणां, विध्वंसकं सौख्यकरं नराणां।
श्री पद्मनाथं करुणा निधानं, वन्देऽहमष्टापद सन्निभाय।।5।।

वंदितोसि साधु वृन्द, पूज्यपादः सुरासुरैः।
'विशद' ज्ञान परिप्राप्य, पद्मप्रभ सुपूजिताः।।6।।

श्री पद्मप्रभु पूजा विधान

स्थापना

भूतप्रेत शाकिन डाकिन की, बाधाओं का हो अवशान।
वृद्धी हो व्यापार में धन की, होय क्लेश का पूर्ण निदान।।
वृद्धी होय ज्ञान में अतिशय, शांतीमय होवे परिवार।
सेवा मिले नौकरी इच्छित, विघ्न पूर्णतः होवें छार।।

दोहा - पद्मप्रभ का कर रहे, भाव सहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं सर्व आधि व्याधि विनाशक लोकोपकारी श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय-छन्दः)

जल तन की प्यास बुझाता है, चेतन की प्यास न बुझ पाए।
है विशद ज्ञान की प्यास मुझे, वह ज्ञान प्रकट अब हो जाए।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जले सदा, घेरे रहती हैं चिन्ताएँ।
अब पूज रहे हम गंध बना, उनसे अब हम मुक्ती पाएँ।।

जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को भाती है उज्ज्वलता, पर कर्म किए हमने काले।
जिन पूजा आतम धवल करे, टूटें सब कर्मों के जाले।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मदहोश करे पावन मन को, चेतन जागृत ना होती है।
पुष्पों की गंध नाशिका को, सुख दे कर्मों को खोती है।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाने पीने की चाह सदा, जीवों के मन में रहती है।
जिन पूजा करके तृप्ती हो, माँ जिनवाणी यह कहती है।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उजयारे रवि शशि बिजली के, ये सब ही तम को हरते हैं।
भव दीप जला पूजा करके, चैतन्य प्रकाशित करते हैं।।

जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ कर्म कर्म के हितकारी, कर्मों का जोर चलाते हैं।
चेतन जागृत जब हो जाए, तो कर्मों से बच जाते हैं।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करते चाह लिए, निस्वार्थ भक्ति ना होती है।
हो मुक्ती पद की चाह विशद, जो सर्व दुखों को खोती है।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अष्ट कर्म सब दुखदायी, उनसे सम्बन्ध बनाए हैं।
अब मुक्ती पाने को उनसे, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांती धारा दे रहे, विनय भाव के साथ।
विशद भावना भा रहे, बनें श्री के नाथ।।
(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने मुक्ती धाम।
होवे पूरी कामना, करते चरण प्रणाम।।
(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - पद्म प्रभु भगवान का, गाए जो यशगान।
पाए जग के सौख्य वह, अन्त होय कल्याण।।

(नयनमालिनी-छन्द)

पदमप्रभु जिनराज नमस्ते, सिद्ध शिला के ताज नमस्ते।
तीर्थंकर अखलेश नमस्ते, वीतराग परमेश नमस्ते।।
नगर कौशाम्बी रत्न बरसते, नर नारी मन खूब हरसते।
गर्भ पूर्व छह माह नमस्ते, प्रभु करुणा की छाँह नमस्ते।।
श्रीधर नृप के द्वार नमस्ते, हुए मंगलाचार नमस्ते।
जन्मे श्री जिनदेव नमस्ते, स्वर्ग से आये देव नमस्ते।।
मात सुसीमा श्रेष्ठ नमस्ते, गर्भ में आए यथेष्ठ नमस्ते।
संगारम्भ विहीन नमस्ते, निज गुणमय स्वाधीन नमस्ते।।

ग्रैवेयक अवतार नमस्ते, कुगति अशुभ क्षयकार नमस्ते।
मनुज सुगति शुभकार नमस्ते, उत्तम संयम धार नमस्ते।।
चउ आराधन वान नमस्ते, किए कर्म की हान नमस्ते।
अष्टम भू अधिराज नमस्ते, अष्ट गुणों के ताज नमस्ते।।
केवल ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, हर्त्ता भव भय धीर नमस्ते।

दोहा - पद्म समान हैं जिन प्रभु, पद्मप्रभु है नाम।
हमको भी निज सम करो, शत्-शत् बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पद्मप्रभु के चरण की, भक्ति करूँ कर जोड़।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

दोहा - बीजाक्षर जग पूज्य हैं, प्रातिहार्य संयुक्त।
भाव सहित ध्यायें विशद, हों कर्मों से मुक्त।।

।। अथ प्रथम वलयोस्परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अष्ट प्रातिहार्य बीजाक्षर

चाल छन्द

हं बीजाक्षर मन भाए, स्व वर्ग में प्राणी ध्याये।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।1।।

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्य्रूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भं बीजाक्षर मनहारी, स्व वर्ग युक्त शुभकारी।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।2।।
ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्य्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
मं बीजाक्षर शुभ जानो, स्व वर्ग युक्त शुभ मानो।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।3।।
ॐ ह्रीं म्म्ल्व्र्य्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
रं पिण्डाक्षर को ध्यायें, निज में निज गुण प्रगटाएँ।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।4।।
ॐ ह्रीं र्म्ल्व्र्य्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
घं पिण्डाक्षर शुभ ध्याए, स्व वर्ग युक्त मन भाए।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।5।।
ॐ ह्रीं घ्म्ल्व्र्य्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
झं पिण्डाक्षर अतिशायी, स्व वर्ग युक्त शुभ भाई।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।6।।
ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्य्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
सं बीजाक्षर शुभकारी, स्व वर्ग युक्त शिवकारी।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।7।।
ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्य्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
खं बीजाक्षर शिवदायी, स्ववर्ग में ध्याएँ भाई।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।8।।
ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्य्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हं बीजाक्षरादिक गाए, वसु स्व वर्णों में ध्याये।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युक्त अष्ट बीज मण्डित सर्वविघ्न विनाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलयः

दोहा - अष्ट कर्म को नाश कर, कार्य करें सब सिद्ध।
पाने को हम आठ गुण, पूजें जगत प्रसिद्ध।।

।। अथ द्वितिय वलयोस्परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अष्टकर्म रहित अष्टगुण युक्त श्री जिन

चौपाई

प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर केवल ज्ञान प्रकाशे।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु दर्शानावरण विनाशे, फिर केवल दर्श प्रकाशे।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शन गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु वेदनीय के नाशी, सुख अव्याबाध प्रकाशी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु मोहनीय के नाशी, हैं सुख अनन्त के वासी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु आयू कर्म विनाशे, गुण अवगाहनत्व प्रकाशे।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं नाम कर्म के नाशी, सूक्ष्मत्व सुगुण के वासी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु गोत्र कर्म विनशाए, अवगाहन गुण प्रगटाए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरु-लघुत्व गुणयुक्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु अन्तराय के नाशी, हैं बल अनन्त के वासी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं वीर्यानन्त गुण युक्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु अष्ट कर्म विनशाए, जो सुगुण अष्ट प्रगटाए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशकाय सम्यक्त्वादि अष्ट सिद्ध गुण समन्विताय पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः

सोरठा – सर्व विघ्न हों दूर, श्री जिन की अर्चा किए।
सुख मय हो भरपूर, जीवन शांतीमय बने ।।

।। अथ तृतिय वलयोस्परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अरिष्ट निवारक श्री जिन के अर्घ्य

चौपाई

मन वच तन के पड़े हैं फेरे, अतः कर्म रहते हैं घेरे।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विघ्नों को जो दूर भगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं संसार दुःख नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मोदय ने हमको घेरा, दरिद्रता ने डाला डेरा।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व दरिद्रता नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मोदय में खोटे आएँ, जलोदरादिक रोग सताएँ।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं जलोदरादिक रोग नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

टी.बी. शुगर आदि बीमारी, सदा सताए सबको भारी।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं क्षयरोग-शुगर-कैंसारादि सर्व भयंकर रोगनाशक
श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र कर्ण के रोग कहाए, भारी उनसे सदा सताए।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं नेत्र कर्णादि सर्व रोग नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्त पित्त ज्वर आदिक भाई, रहे लोक में ये दुखदायी।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं वात, पित्त, कफ, जलोदर, उदरादि सर्व रोग नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल थल नभचर प्राणी भाई, कृत उपसर्ग रहे दुखदायी।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं तिर्यंच कृत उपद्रव नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिता पुत्र भाई जो गाए, राग द्वेष कर सभी सताए।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं कुटुम्ब दुःख क्लेश नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न विनाशी हैं जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।
भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ देवाय नमः मम सर्वकार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पद्म प्रभ जिन पद युगल, वन्दन मेरा त्रिकाल।
भव क्रन्दन हो नाश मम, गाते हैं जयमाल।

(ताटक छन्द)

जय पद्मप्रभ जिन चंद वरं, जय ज्ञान पयोदधि पूर्ण करं।
भव सागर तारक पोत वरं, जय अष्ट कर्म मद–चूर करं।।1।।
दुख गिरि के भंजक वज्र समं, तुम तन मन रंजन हे निरुपम !।
तव समवशरण शुभकार परं, असि कर्म विनाशन सुष्ठु सरं।।2।।
जहाँ अष्ट भूमियाँ स्थित हैं, जो कनक स्वर्णमय निर्मित हैं।
जहाँ नील सुमणि की पीठ रही, जो चूड़ी सदृश गोल कही।।3।।
जहाँ तोरण द्वार सु राजत हैं, जहँ मानस्तंभ विराजत हैं।
शुभ चैत्य भूमि पहली गाई, जिन चैत्यों संयुत बतलाई।।4।।
है भूमि खातिका में खाई, जहाँ चित्र शोभते अतिशाई।
है लता भूमि अतिशयकारी, जहाँ फूल खिले हों मनहारी।।5।।
उपवन भू में वन चार कहे, जिन चैत्य वृक्ष में शोभ रहे।
ध्वज भूमी में ध्वज फहराएँ, मानो जिनकी महिमा गाएँ।।6।।
सुर वृक्ष भूमि शुभ फलदाई, जिनबिम्ब रहें जहाँ अतिशायी।
है भवन भूमि अतिशय प्यारी, जो सोहे अनुपम मनहारी।।7।।
फिर आगे अष्टम भूमि रही, जो द्वादश सभा संयुक्त कही।
है गंध कुटी रचना विशेष, जहाँ अधर शोभते हैं जिनेश।।8।।

शुभ दिव्य देशना हो महान, नत हो गणधर झेलें प्रधान।
ॐकार मयी जो है विशेष, जो हरण हार जग का क्लेश।।9।।

दोहा – जल में रहें जल से विशद, भिन्न रूप मनहार।
पद्मप्रभु संसार में, रहे स्वयं अविकार।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पद्म चिन्ह से शोभते, रंग है पद्म समान।
पूज्य हुए संसार में, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री पद्मप्रभु चालीसा

दोहा – अर्हत्-सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय जिन संत।
जिनकी अर्चा कर मिले, भवसागर का अंत।।
तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु, का करके शुभ ध्यान।
चालीसा पढ़ते विशद, पाने पद निर्वाण।।

चौपाई

जय श्री पद्म प्रभु गुणधारी, आप जगत में मंगलकारी।।1।।
पिता धरण के राजदुलारे, मात सुसीमा के हो प्यारे।।2।।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, जन्मे जिस भू पे त्रिपुरारी।।3।।
ढाई शतक धनु ऊँचे गाये, लाल वर्ण सुन्दर तन पाये।।4।।

छठवें तीर्थंकर कहलाए, पंच कल्याणक इन्द्र मनाए।।5।।
चार घातिया कर्म नशाए, तत्क्षण केवल ज्ञान जगाए।।6।।
हो सर्वज्ञ ज्ञान प्रगटाया, सद् उपदेश जगत ने पाया।।7।।
छियालिस मूल गुणों के धारी, आप हुए जग-जन हितकारी।।8।।
धनद इन्द्र वहाँ पर आया, सुन्दर समवशरण बनवाया।।9।।
द्वादश धर्म सभा अति प्यारी, धनपति इन्द्र रचा मनहारी।।10।।
जन्म जात बैरी जहाँ आए, बैर छोड़ मैत्री अपनाए।।11।।
तीस हजार तीन लख जानो, समवशरण में साधू मानो।।12।।
बीस हजार चार लख भाई, आर्यिकाओं की संख्या गाई।।13।।
एक सौ दश गणधर बतलाए, वज्र चँमर पहले कहलाए।।14।।
सुर-नर पशु त्रय गति के प्राणी, आकर सुनते हैं जिनवाणी।।15।।
कोई सद् श्रद्धान जगाते, कोई देश व्रतों को पाते।।16।।
कोई मुनि की दीक्षा पाते, कोई केवल ज्ञान जगाते।।17।।
क्षायिक नव लब्धी के धारी, पाके होते शिव भरतारी।।18।।
अपने सारे कर्म नशाते, फिर वे शिव पदवी को पाते।।19।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, मोहन कूट से शिव पद पाए।।20।।
दुखिया दर पे दुःख मिटावें, निर्धन धन इच्छित फल पावें।।21।।
नाम आपका संकट हारी, ध्यान जाप है मंगलकारी।।22।।
भूत प्रेत व्यन्तर बाधाएँ, शाकिन डाकिन की पीड़ाएँ।।23।।
पर कृत मंत्र तन्त्र दुखकारी, मिट जाती है पीड़ा सारी।।24।।
कर्म असाता उदय में आए, कोई असाध्य बीमारी पाए।।25।।

केन्सर हृदय रोग हो भारी, फैली हो दुर्दम दुर्भारी।।26।।
जल वृष्टी हो प्रलय मचाए, या दुष्काल भयानक आए।।27।।
ज्ञान योग में बाधा आए, विद्याभ्यास भी ना हो पाए।।28।।
यश मिलते-मिलते रह जाए, रविग्रह पीड़ा सतत सताए।।29।।
किया परिश्रम निष्फल जाए, रोजगार भी ना चल पाए।।30।।
राजा मंत्री आदि सतावें, कर्मचारी भी दुख पहुचावें।।31।।
पद्मप्रभु पद पूज रचावें, भाव सहित चालीसा गावें।।32।।
सब कष्टों से मुक्ती पावें, सुख शांती सौभाग्य जगावें।।33।।
वास्तु दोष की हों बाधाएँ, ज्योतिष आदिक की पीड़ाएँ।।34।।
सुर-नर पशु कृत बैर कहाए, उनसे पूजा मुक्ति दिलाए।।35।।
यात्रा वाहन कृत बैर कहाए, उनसे पूजा मुक्ति दिलाए।।36।।
अनायास ही यदि सताएँ, नाश होय जिन प्रभु को ध्याएँ।।37।।
जगह जगह जिन मंदिर जानो, नगरी में जिन मंदिर मानो।।38।।
बाड़ा के पद्मप्रभु गाए, अतिशय जो कई एक दिखाए।।39।।
पद्मप्रभु हैं संकटहारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़ें पढ़ाएँ जीव,
पद्मप्रभु के चरण में, जागे पुण्य अतीव।
रोग-शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश,
जीवन हो सुख शांतिमय, विशद पूर्ण हो आश।।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः।

आरती

ॐ जय पदम् प्रभु देवा !, स्वामि पदम् प्रभु देवा।
तीर्थंकर श्री पदम्प्रभु की, करते हम सेवा।।
ॐ जय पदम्प्रभु देवा।। टेक।।
माघ कृष्ण षष्ठी को माँ के,
गर्भ में प्रभु आए-स्वामी गर्भ में प्रभु आए।
कार्तिक सुदि तेरस को-2,जन्म आप पाए।।.... ।।1 ।।
मात सुसीमा धरण सेन नृप,
के गृह में आए-स्वामी के गृह में आए।
कौशाम्बी नगरी अनुपम शुभ-2, पावन कहलाए।।.... ।।2 ।।
गजबन्धन को देख प्रभुजी,
मन वैराग्य लिए- स्वामी मन वैराग्य लिए।
कार्तिक सुदि तेरस को-2, दीक्षा ग्रहण किए।।.... ।।3 ।।
चैत्र शुक्ल पूनम को,
विशद ज्ञान पाए-स्वामी विशद ज्ञान पाए।
समोशरण तब देव वहाँ पर-2, पावन बनवाए।।.... ।।4 ।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी,
गिरि सम्मेद गये-स्वामी गिरि सम्मेद गये।
मोहन कूट से प्रभु जी-2, सारे कर्म क्षये।।.... ।।5 ।।

जन्म मरण दुख हर्त्ता,
पाप हरो मेरे–स्वामी पाप हरो मेरे।
शिव पदवी हम पाएँ–2, कटें कर्म घेरे।।.....।।6।।
दीप जलाकर पावन,
आरति को लाए–स्वामी आरति को लाए।
कृपा प्राप्त करने को–2, भक्त विशद आए।।.....।।7।।
ॐ जय पदम् प्रभु देवा, स्वामि पदम् प्रभु देवा।
तीर्थंकर श्री पदम्प्रभु की, करते हम सेवा।।
ॐ जय पदम् प्रभु देवा।।टेक।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य–खण्डे भारतदेशे उत्तराखंड प्रान्ते हरिद्वार स्थित 1008 श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2545 वि.स. 2076 मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे बारसतिथि दिन शुक्रवासरे श्री पद्मप्रभु मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।